BANC 105: भारत में आदिवासी और किसान

अनुशिक्षक चिंहित सत्रीय–कार्य

(TMA)

कोर्स कोड: बीएएनसी 105

असाइनमेंट कोड: बीएएनसी 105/ASST/TMA/ जुलाई 2026 और जनवरी 2027

कुल अंक: 100

सत्रीय कार्य में तीन अनुभाग हैं। आपको सभी अनुभागों में सभी प्रश्नों के उत्तर देने होंगे।

सत्रीय कार्य – I

निम्नलिखित में प्रत्येक के बारे में 500 शब्दों में उत्तर दें। **2×20 = 40**

क. भारत में जनजातियों की जनांकिकीय प्रोफाइल तथा उनके वितरण की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए।

ख. भारत में नृजातीय–राजनीतिक आंदोलनों का परीक्षण कीजिए।

सत्रीय कार्य – II

निम्नलिखित में प्रत्येक के बारे में 250 शब्दों में उत्तर दें। (संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए) **2×10 = 20**

क. स्वतंत्रता–उपरांत भारत की वन नीति तथा उसके जनजातियों पर पड़े प्रभाव का विवरण दीजिए।

ख. ग्रामीण क्षेत्रों में बाजार अर्थव्यवस्था के प्रभाव की विवेचना कीजिए।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 75 शब्दों में दीजिए। **5X2 = 10**

क. स्वतंत्रता–उपरांत जनजातीय प्रशासन

ख. ऋण बंधन

ग. तेलंगाना की मल्लन्नसागर परियोजना

घ. प्रवासन

ङ. तेभागा आंदोलन

सत्रीय कार्य – III

क. क्षेत्रकार्य (फ़ील्डवर्क) की परिभाषा दीजिए। यदि आपको पोलावरम परियोजना क्षेत्र के निकट रहने वाली किसी जनजातीय आबादी के बीच क्षेत्रकार्य करना हो, तो बताइए कि आपके अध्ययन का मुख्य फोकस क्या होगा? इस विषय से संबंधित कुछ शोध प्रश्न प्रस्तुत कीजिए। साथ ही, यह स्पष्ट कीजिए कि आँकड़ों के संकलन के लिए आप किन विधियों, उपकरणों तथा तकनीकों का उपयोग करेंगे। **20**

ख. पोलावरम परियोजना पर तैयार की जाने वाली परियोजना रिपोर्ट के संदर्भ में प्रतिवेदन (रिपोर्ट) लेखन तथा संदर्भों की शैली पर चर्चा कीजिए। **10**

क. भारत में जनजातियों की जनांकिकीय प्रोफाइल तथा उनके वितरण की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए। (20 अंक)

उत्तर

भारत की जनजातियाँ देश की सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। जनजातीय समूहों में अपनी भाषाएँ, सामाजिक संस्थाएँ, पारंपरिक ज्ञान और आजीविका के अलग-अलग रूप मिलते हैं। उनकी जनांकिकीय प्रोफाइल का अर्थ है—आबादी का आकार, स्त्री-पुरुष अनुपात, आयु संरचना, साक्षरता, ग्रामीण-शहरी निवास, सामाजिक-आर्थिक दशा और भौगोलिक वितरण का अध्ययन। प्रशासनिक रूप से संविधान के अनुच्छेद 342 के अंतर्गत अधिसूचित समुदायों को अनुसूचित जनजाति कहा जाता है। सभी जनजातीय समुदाय एक जैसे नहीं हैं, इसलिए उनकी स्थिति समझने के लिए राष्ट्रीय आँकड़ों के साथ क्षेत्रीय भिन्नताओं को भी देखना पड़ता है।

जनसंख्या का आकार और वृद्धि

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में अनुसूचित जनजातियों की आबादी लगभग 10.45 करोड़ थी, जो कुल जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत थी। इनकी जनसंख्या 2001 की तुलना में बढ़ी, पर अलग-अलग राज्यों में वृद्धि का स्तर एक समान नहीं था। जन्म-मृत्यु दर के अलावा शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रवासन और अनुसूचित जनजाति की अधिसूचित सूची में अंतर भी जनसंख्या की तुलना को प्रभावित कर सकते हैं। इसलिए जनांकिकीय परिवर्तन को केवल संख्या बढ़ने या घटने तक सीमित नहीं करना चाहिए। यहाँ दिए गए राष्ट्रीय आँकड़े 2011 की जनगणना पर आधारित हैं।

लिंग अनुपात और आयु संरचना

अनुसूचित जनजातीय जनसंख्या में पुरुष और महिलाओं की संख्या अपेक्षाकृत संतुलित रही है। वर्ष 2011 में जनजातीय लिंग अनुपात लगभग 990 महिलाएँ प्रति 1000 पुरुष था, जो कुल भारतीय जनसंख्या के लिंग अनुपात से अधिक था। लेकिन अच्छी संख्या होने का अर्थ अपने-आप महिलाओं की बराबर सामाजिक स्थिति नहीं है। शिक्षा, स्वास्थ्य-सेवा, संपत्ति पर नियंत्रण और